A 213 – O – 2

Second Year B.A. Examination, May/June 2009
(Revised SIM Scheme)
OPTIONAL – HINDI (Paper – II) (Group – II)
(Texts : पद्य रत्नावली, कामायनी, अजातशत्रु, पाँच नये एकांकी)

Date : 1-6-2009
Time : 2.00 p.m. to 5.00 p.m. Max. Marks : 90

SECTION – A

I. पठित अंश के आधार पर रहीम के दोहे में व्यक्त नीति पर प्रकाश डालिए। **20**

अथवा

'रावण का पुत्रशोक ' कविता के आधार पर रावण के पुत्र–शोक का वर्णन कीजिए।

II. 'चिंता सर्ग' के प्रकृति–सौंदर्य का वर्णन कीजिए। **20**

अथवा

'चिंता सर्ग' के आधार पर मनु का चरित्र चित्रण कीजिए।

III. 'अजातशत्रु' नाटक के आधार पर किन्हीं दो प्रमुख पुरुष पात्रों का विश्लेषण कीजिए। **15**

अथवा

टिप्पणियाँ लिखिए :

1) 'अजातशत्रु' नाटक की भाषा

2) मल्लिका।

SECTION – B

IV. एकांकी कला के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' अथवा 'जोंक' एकांकी की आलोचना कीजिए। **15**

P.T.O.

SECTION – C

(सप्रसंग व्याख्या)

V. अ) मन रे परसी हरि के चरण। **7**

सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जिन चरण प्रहलाद परसे, इंद्र पदवी धरण।
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी सरण।
जिन चरण बह्माण्ड मेट्यो, नखसिखाँ सिरी धरण।
जिन चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण।
जिन चरण कालीनाग नाच्यों, गोपलीला करण।
जिन चरण गोबरधन धायों, इन्द्र को ग्रब हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण।।

अथवा

देख वसुधा का यौवन–भार
गूँज उठता है जब मधुमास
विधुर उर के–से मृदु उद्‌गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्‌वास,
न जाने, सौरभ के मिस कौन
संदेश मुझे भेजता मौन!

आ) निकल रही थी मर्म वेदना करूणा विकल कहानी सी, **6**
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती–सी पहचानी–सी।

अथवा

वह उन्मत्त विलास हुआ क्या! स्वप्न रहा था छलना थी।
देवसृष्टि की सुख–विभावरी नाराओं की कलना थी।

इ) सावधान ! राजकुमार ! ऐसी दुराचार की बात न सोचिये। यदि आप इस पथ से नहीं लौटते, तब मेरा भी कुछ कर्तव्य होगा, जो आपके लिए बड़ा कठोर होगा। **7**

अथवा

मैं नहीं जानती थी कि निसर्ग से इतनी करुणा और इतना स्नेह, सन्तान के लिए इस हृदय में संचित था।

———————